SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 4, Issue-2, April to June : 2026
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

नारी-चेतना एवं 'आवां' उपन्यास

डॉ जगदीश सोलंकी

साठोतरी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं का विशेष योगदान रहा है उन महिला लेखिकाओ में मन्नुभंडारी, उषाप्रियंवदा, शिवानी, कृष्णासोबती, ममताकालिया, मंजुलभगत, मृदुलागर्ग, अमृताप्रितम, चित्रामुद्गल आदि प्रमुख है। चित्रामुद्गल ने 'आवां' उपन्यास लिखकर हिन्दो साहित्य को और समृद्ध किया।

चित्रामृद्गल आधुनिक कथा साहित्य की बहुचर्चित और सम्मानित रचनाकार है। प्रखर चेतना की संवाहिका चित्राजी के पास अनुभवो का विपुल भंडार है। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के विभिन्न समुदायों और विशेषकर दलित शोषितों के बीच रहकर बिताया।

'आवां' उपन्यास मुंम्बई की ट्रेड यूनियनो और मजदूर संगठनो के जीवन संघर्ष को लेकर लिखा गया है। उपन्यास मुंम्बई की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है, जिसकी मुख्य पात्र 'नमिता' है। जो आज की नारी का प्रतिरुप है।

'आवां' की नायिका 'नमिता' 'कामगार अघाडी' श्रमिक संगठन के महासचिव एवं जुझारु मजदूर नेता देवीशंकरपाण्डे की बेटी है। नमिता अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती, क्योंकी उसकी आर्थिक परिस्थिति ठीक नहीं है। नमिता का चरित्र एक महेनती एवं संघर्षशील लड़की के रुप में उभरता है। नमिता अपनी छोटी बहन मुनिया और छोटे भाई छुन्नु की हरतरह की देखभाल भी करती है, और अपनी घर–गृहस्थी भी वही चलाती है। नमिता एक यौनशोषित लड़की है। उसका बाल्यावस्था से ही शोषण होता है।

''दस साल की उम्र में अपने मौसा की विकृत यौन–मानसिकता का शिकार बनती है, और उसके बाद मजदूर आंदोलन से जुडने के बाद नवयुवती के रुप में अपने नेता, पिता नहीं परन्तु पितातुल्य अन्ना साहब के विकृत यौनाचार के दायरे मे आती है। बालिका के रुप में विरोध कर सकने की असहायता के बावजूद अपनी माँ से सबकुछ बताने पर जबरन अपनी माँ के द्वारा एक औरत के द्वारा चुप करा दी जाती है और नवयुवती के रुप में, जागरुक और सजग होते हुए भी निम्न मध्यमवर्गीय संस्काबद्धता और दब्बूपन के चलते न केवल उस विकृत यौनाचार पर चुप रहती है। आक्रान्त होने पर भी आक्रान्ता के खिलाफ उठ नही पाती।''

नमिता अन्ना साहब के अश्लिल आचरण के कारण नौकरी का परित्याग कर देती है। अब नमिता बन्धनो से मुकत होकर जीना चाहती है। वह अपने पिता की चिता को आग देकर सदियों के बन्धन को तोड़ने का प्रयास करती है। और साथ ही एक आधुनिक नारी के जीवन मानदण्डों को स्वीकारती हुई आगे बढ़ती है, लेकिन वह निरंकुशता को फिर भी नहीं स्वीकारती। उसके बारे में श्रीनिवास श्रीकान्त लिखते है कि –

''नमिता एक सार्वभौमिक और उदार प्रकृति का चरित्र है जो अच्छे से अच्छे और निम्न से निम्न स्तर के माहोल में अपने आपको व्यवस्थित कर लेता है। वह रुढ़िमुकत भले ही हो निरंकुश नही है।''

उपन्यास में कई उपकथाएँ मुख्य कथा के साथ चलती है, जिनमें से पहली दु:खद उपकथा 'सुनन्दा' की है। चित्रा मुद्नल ने इस कथा के माध्यम से हिन्दु–मुश्लिम साम्प्रदायिकता की समस्या को प्रस्तुत किया है – देवीशंकर पाण्डे एवं किशोरीबाई की अवैध सन्तान सुनन्दा एक मुश्लिम युवक 'सुहैल' से प्रेम करती है। 'सुनन्दा' हिंदु और, 'सुहेल' मुसलमान होने के कारण उनकी शादी सामाजिक रीतरिवाजी लोग कबूल करना नहीं चाहते है। अगर सुहैल सुनन्दा से विवाह करना चाहता है तो वह सुनन्दा को धर्मपरिवर्तन करके 'इस्लाम' कबूल करने के लिए कहता है। ओर सुहैल के माता–पिता का भी यही आग्रह था। लेकिन विवाह करने से पूर्व सुनन्दा का मुसलमान बनने से इनकार कर देती है, और सुहैल के साथ टाईम बिताकर वह कुछ समय पश्चात सुहैल के बच्चे की कुँआरी माँ बन जाती है, उस दौरान उसे कंपनी की सुविधाएँ भी नहीं मिल पाती, जो माँ बनने पर एक महिला को मिलती है। तब नमिता उसके पास जाकर उसका साहस बाँधती है, और अपने

पिता व किशोरीबाई के माध्यम से उनके सम्बन्धो से परिचित होती है। लेकिन नमिता भी उसे न्याय नहीं दे पाती और कुछ दिन बाद सुनन्दा की साम्प्रदायिकता के कारण हत्या हो जाती है।

दूसरी उपकथा 'स्मिता' की है, जो मुम्बई के मटका किंग मदन खत्री की छोटी बेटी है और नमिता की सहपाठिनी सहेली है। साथ ही वह बहुत खुले विचारों की लड़की है। उसका पिता मदन खत्री दिन–रात शराब में धुत रहता है और अपनी बड़ी बेटी के साथ दुराचार करता है, जिसके कारण उसकी बेटी स्मिता इस कदर आहत होती है कि एक दिन चुपके से अपने पिता को सीढ़ियों से धक्का दे देती है, जिसके फलस्वरुप उनकी मृत्यु हो जाती है।

तीसरी उपकथा 'गौतमी' की है। गौतमी का वास्तविक नाम नेहा है। उसकी माँ अपने व्यभिचारी पति से तलाक लेकर दूसरा विवाह करती है, जहाँ गौतमी को दो सौतेले भाई (जवान) मिलते है। सौतेला बड़ा भाई विनोद गौतमी के साथ जबरन शारिरिक सम्बन्ध बनाता है, जिसके कारण वह गर्भवती हो जाती है और आत्महत्या करने का प्रयास करती है। तब उसे मैडम वासवानी बचाती है, और अपने पास नौकरी देती है, साथ ही सौदे के मुताबिक उसे जापान भेजती है, जहाँ गौतमी निःसन्तान उद्योगपति छेड़ा साहब के बच्चे की माँ बनती है। और भारत लौटते ही छेड़ा साहब उस बच्चे को अपना बच्चा साबित कर देते है। और साथ ही गौतमी को ऊँची रकम भी देते हैं।

इन कथाओं से सम्बन्धित और भी कई ऐसे प्रसंग सामने आते है, जिनमें नारी का किसी न किसी रुप में शोषण होता है।

समकालीन महिला लेखिकाओने केवल नारीजीवन तथा त्रासदी ही चित्रित नहीं कि न तो आत्मनिर्भर, स्वच्छंदनारी को चित्रित किया है, नारी मुक्ति में ज्यादातर लेखिकाएँ स्त्री पुरुष समानता की पक्षधर रही है, नाकि सिर्फ नारी की पक्षघर रही है।

चित्रामुद्गल ने अपने 'आवां' उपन्यास में जीवन के विविध पहलूओँ को चित्रित किया है। और आवां उपन्यास के सभी नारी पात्रो को यथाचित न्याय देने का प्रयास किया है।